International Journal of Applied Research 2018; 4(12): 491-494

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(12): 491-494
www.allresearchjournal.com
Received: 16-10-2018
Accepted: 19-11-2018

डॉ. मुकेश वसावा
तुलनात्मक साहित्य विभाग,
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात
युनिवर्सिटी, सूरत, गुजरात, भारत

Corresponding Author:
डॉ. मुकेश वसावा
तुलनात्मक साहित्य विभाग,
वीर नर्मद दक्षिण गुजरात
युनिवर्सिटी, सूरत, गुजरात, भारत

तुलनात्मक साहित्य: सांस्कृतिक अध्ययन की ओर

डॉ. मुकेश वसावा

प्रस्तावना

मानव सभ्यता का विकास जंगल से मैदान तक की सफर का रहा है। जंगल का मानव जीवन आदिम सभ्यता का प्रारंभिक बिंदु रहा है। आदिमता, मासूमियत और सर्वव्यापी गुण-मूल्य, जिसे हम प्रथम मानव व्यक्तित्व कहते हैं, कि जो विकास के प्रेरणा के प्रारंभिक बिंदु रहे हैं ऐसे आदिवासीऔ में देखने को मिलते है। नगर संस्कृति का उदय और सामाजिक परिवर्तन के कारण आदिम गुण और मूल्य नष्ट हो रहे हैं। मानव समाज ने प्रकृति का विनाश करके संस्कृति का विकास तो किया, लेकिन साथ ही साथ विकृतियों ने भी अपने पंख खोले है, उसे समझने-समझाने और जानने के लिए, और जिस तरह पिकोइस और रूसो तुलनात्मक साहित्य अध्ययन में आंतर-सांस्कृतिक (Inter-cultural) अध्ययन पर जोर देते है उसे तात्विक भूमिका पर ये अभ्यास किया है।

तुलनात्मक अध्ययन की मुख्य दिशाएँ:

तुलनात्मक साहित्य अंग्रेजी के 'कंपैरेटिव लिटरेचर' का हिंदी अनुवाद है। एक स्वतंत्र अनुशासन या शाखा के रूप में, इसके शिक्षण-अध्ययन या विदेशों में और भारत या विदेशों में विभिन्न विश्वविद्यालयों में काम करने के लिए विशेष महत्व दिया जा रहा है। विदेशों में इसे 'कहा जाता है' सांस्कृतिक अध्ययन 'से भी जाना जाता है। वर्ष 19 में अंग्रेजी कवि मैथ्यू अर्नोल्ड को लिखे एक पत्र में उन्होंने पहली बार "तुलनात्मक साहित्य" शब्द का इस्तेमाल किया। यहां तक कि रवींद्रनाथ टैगोर भी विश्व साहित्य के बारे में बात करते हैं।

तुलनात्मक शब्दों की कुंजी चीजों की तुलना और तुलना इस तरह से करने की प्रक्रिया है कि उनका उपयोग समानता या अंतर की पहचान के लिए किया जा सके। तुलनात्मक साहित्य अर्थात साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन। तुलनात्मक साहित्य एक से अधिक भाषाओं में लिखे गए साहित्य का अध्ययन है और तुलना इस अध्ययन का मुख्य भाग है।

हेनरी रेमैक: 'तुलनात्मक साहित्य सीमाओं के पार विशिष्ट देशों का अध्ययन है। एक ओर साहित्य या अंतर्संबंध है, तो दूसरी ओर या कला का अध्ययन है, साथ ही विज्ञान, इतिहास, समाजशास्त्र, विज्ञान, धर्म जैसे ज्ञान और विश्वास के क्षेत्र हैं। संक्षेप में, यह एक साहित्य या किसी अन्य या अन्य साहित्य और मानव आविष्कार के अन्य क्षेत्रों से तुलनीय है।

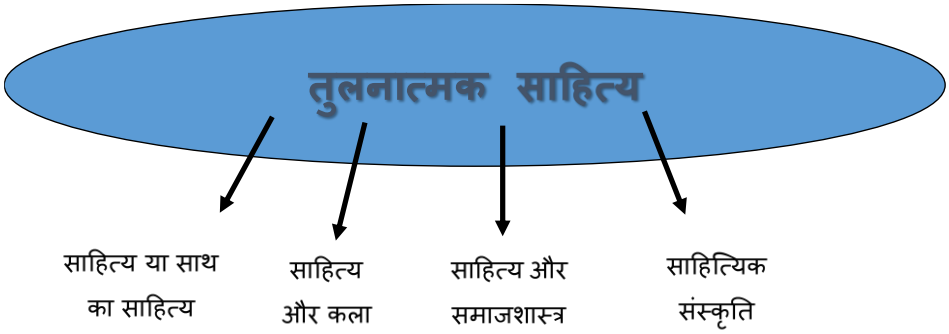

तत्वमसि:

1998 में प्रकाशित, तत्वमसि ध्रुव भट्ट एक सफल कृति है। उपन्यास की विषय वस्तु और उसे अभिव्यक्त करने का ढंग दोनों ही नवीनतम में देखा जा सकता है। उपन्यास के पठान से भावक को उत्तम जीवन पाथे और अच्छा आनंद का अनुभव होता है। उपन्यास में विज्ञान की सुगंध के साथ-साथ एक सार्थक और रोचक कहानी भी जोड़ी गई है। कथा का योजना भी नया है, परंपरा से भीना है। कथानायक का नाम नहीं है, लेकिन उसे मिली हुई। एक डायरी के आधार पर उपन्यास की कथा आगे बढ़ती है। उपन्यास में नर्मदा एक रोल मॉडल है, जो भारत के उत्तर और दक्षिण को जोड़ती है।

मध्य प्रदेश या नर्मद तट या आदिवासी क्षेत्रों में आधुनिक दिमाग और विवेक के साथ युवा यहां सांस्कृतिक विशिष्टताओं को जानने और अपनी रिपोर्ट लिखने के लिए आते हैं। धीरे-धीरे यात्रा करना और शोध करना, विचारों या लोगो का आदान-प्रदान करना, परिचित होना, विभिन्न परिस्थितियों और अनुभवों से गुजरते हुए, मुझे समझ में आता है कि मैं इस क्षेत्र या मनुष्य या प्रकृति या सभी में अहंकार नहीं हूं। रीवा (नर्मदा) सिर्फ एक नदी नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक रूप से समृद्ध, पोषण करने वाली सांस्कृतिक धारा है। किरदार की दृष्टि से केंद्र में सुप्रिया है, लेकिन असल में नायिका नर्मदा उर्फ रीवा नदी खुदा है। एक यात्रा कहानी के साथ-साथ एक पर्यावरण कहानी भी है।

इस उपन्यास का नायक, जो मनुष्य को एक संसाधन मानता है, कहानी के केंद्र में है कि कैसे मनुष्य के मांस और रक्त का संबंध उस मनुष्य से है जो जीवन की प्रक्रिया से गुजर रहा है।

इस उपन्यास में केवल मनुष्य, उसका परिवेश, उसका सुख-दुःख और उसका श्रम है। इसके विपरीत, यह बहाना एक ऐसी कहानी है जो हमारी सांस्कृतिक पहचान को पुष्ट करती है, जो आज के युग में बहुत महत्वपूर्ण और आवश्यक प्रतीत होती है। यह कार्य मानव जीवन और संस्कृति को स्वयं के रूप में परिभाषित करता है।

नर्मदा नायक की कहानी बता रही है, नायक आदिवासियों की कहानी बता रही है, आदिवासी जंगलों की बात कर रहा है। . . बड़ी कुशलता के साथ प्रस्तुत यह कृति अपनी शैली और कथा दोनों के सही अर्थों में एक भारतीय उपन्यास है। नानी मां की कथा, बिंटा की कथा, कालेवाली माई की परंपरा, पुरिया की कहानी, सासली की कथा पश्चिम अफ्रीकी की दगांव नाम की आदिवासी जाति, जंगल की आग और बारिश, जंगल की चुप्पी और शोर, जंगल की मान्यताओं पर आधारित है। के दिन और रात- सब मिल्कर एक इसा पोत रचते हैं की ये कहना थोड़ा कठिन है की मैं कलात्मकता कम है।

'जंगल के फूल':

राजेंद्र अवस्थी द्वारा रचित 'जंगल के फूल' 1960 में प्रकाशित हुआ था। 'जंगल के फूल' में क्षेत्रीयता अधिक है। 'जंगल के फूल' एक विशुद्ध रूप से क्षेत्रीय उपन्यास है। डॉ. कडवे कहते हैं: " जंगल के फूल एक विशुद्ध रूप से सर्वश्रेष्ठ क्षेत्रीय उपन्यास है। " उपन्यास वास्तविक और काल्पनिक का अद्भुत संयोजन है। हालांकि, उपन्यास की क्षेत्रीयता है इसमें कोई बाधा नहीं है। चेतना का प्रगतिशील दोस्ती से विवेचन भी करता है। उपन्यास के पहल में जगदलपुर में ग्रीर के सैनिक और आदिवासियों के बीच तीर कमानों का संघर्ष चित्र है। गदर का संगठन घोटुल द्वारा शुरू किया गया था। : "सभी अविवाहित ग्रामीण वाक-युवतिया: संध्या-समय यहाँ इकट्ठा होता है। ढोल की आवाज, नृत्य की गति और संगीत की धुन एक अच्छे माहौल को जन्म देती है। घोटुल के सदास दिन भर की थकन भुलाकर आनंद और अनुराग के एक नए संसार में पांच जाते हैं। घोटुल मुदिया समाज का वह मिलन-स्थल है जहान उन्वाहित लोग सामाजिक और योन-संबंधी अनुभव के लिए सुविधा से मिल पाते हैं।"

उपन्यास 'जंगल के फूल' मध्य प्रदेश या गठबेवाल, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, नेतनार और चिंताकोट गांवों के लोगों का एक अद्भुत चित्रण है। यह दक्षिण में सबसे बड़ा जिला है, अगर भारत देश का सबसे बड़ा जिला है, लेकिन यह भी सबसे पिछड़ा।

इनकी लोक संस्कृति आदिम सभ्यता का आंशिक परिचय देती है। उनके रहन-सहन, उनके खान-पान, उनके रिश्ते, उनके त्योहार, उनकी अंध आस्था और उनकी परंपराएं बहुत ही आदिम हैं। हिरमा एक जानवर है या सांभर या गेल या पास रमुन लगाकर खुन पिता है, चिड़िया या चूहे को पक्का आग में भूल कर भरता बना लेना, खा लेना एक साधरण-सी बात है के समान है। साल भर मेंढक अपने भोजन की कमी को पूरा करते हैं और माता (लाल चीता) का अभ्यास उनका पसंदीदा भोजन है। कंद जड़, फल एक दैनिक आहार है। पोशाक बहुरंगी है। पीठ पर एक तीर है। हत्या एक इंका खेल है। पाप को अंगीकार करने की कुंजी उनमें है। तंबाकू की मांग के साथ अनुचित संबंध के लिए एक महिला को आमंत्रित करना माना जाता है। पात्रों की भाषा क्षेत्रीय है, ज़िरिया और दंतेश्वरी लोक कथाएँ भी उपन्यास में शामिल हैं। कई अवसरों पर शराब, लोक नृत्य और लोक गीतों का आयोजन किया जाता है। जादू टोना में विश्वास करो। कई पुरानी परंपराओं और अंधविश्वासों को माना जाता है। करपुड़ 5 मीटर, एरीपुंडम आदि के अवसर पर चिकन, सुअर या भैंस की बलि दी जाती है। उपन्यास में प्रकृति के कई खूबसूरत चित्र हैं। फुटनोट में क्षेत्रीय शब्दों का अर्थ समझाया गया है। मैंने इस जाति या लोगों के लिए अपने तरीके से स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था। "जंगल के फूल" एक शक्तिशाली, सर्वश्रेष्ठ क्षेत्रीय उपन्यास है।

दो उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन:

दो उपन्यास 'तत्वमसि' (गुजराती) और 'जंगल के फूल' (हिंदी) में लिखे गए आदिवासी समाज के केंद्र में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। दोनों उपन्यासों में मध्य प्रदेश या आदिवासी समाज का चित्रण किया गया है। 'तत्वमसि' में मैं नर्मदा के तट पर या अरयों में आदिवासी समूह को चित्रित कर रहा हूँ, फिर 'जंगल के फूल' में मैं मध्य प्रदेश या गढ़बंगल, नारायणपुर, दंतेवाड़ा, नेतनार और चिंतकोट आदि में हूँ। ठीक वैसा ही चित्र मिलता है। दोनों उपन्यासों में जनजातियों या रीति-रिवाजों, जीवन शैली, उनके त्योहारों, भोजन, पेय, विवाह आदि, इन आदिवासी समाजों में महिलाओं की स्थिति और उनमें मौजूद आदिम गुणों का विस्तृत चित्रण है। गौड़ जाति का सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक जीवन हमारे सामने खड़ा है। उनकी मान्यताओं और अंधविश्वासों में, भूत-प्रेत की मान्यताओं में, नृत्य-गीत में हमें पूरे समाज की पहचान मिलती है। गुजराती उपन्यास 'तात्वमसि' वास्तविकता से दूर आदर्शवादी कथा निर्माण और चरित्र-निर्माण को दर्शाता है। कल्पना उभरती है और सामने आती है। इसलिए हिंदी उपन्यास 'जंगल के फूल' यथार्थवादी नहीं बल्कि वास्तविक स्थिति को दर्शाता है।

दोनों उपन्यासों में आदिवासियों का आपस में, प्रकृति के साथ, समाज के साथ या बाहरी वातावरण के साथ संघर्ष भी लिखा गया है। सामाजिक परिवर्तन या समाज में आंदोलन का कारण, सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन, मानवीय संबंधों में दरारें आदि भी यहां पाए जाते हैं। इस प्रकार यदि हमें दो भिन्न-भिन्न भाषाओं अथवा दो उपन्यासों में आदिम समाज का चित्रण मिलता है तो जानने और समझने का उद्देश्य इस प्रस्तुत अध्ययन में किया गया है। इस प्रकार तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन सांस्कृतिक अध्ययन की प्रमुख शाखा खोलता है।

संदर्भ:

1. देसाई, (डॉ.) अश्विन: तुलनात्मक साहित्य की दिशा में, दिव्यानंद प्रकाशन, सरदारबाग सोसाइटी, बारडोली, प्रथम संस्करण: 1992, पृष्ठ: 27.
2. कड़वा (डॉ.) एच. कश्मीर: हिंदी उपन्यासों में क्षेत्रीय उपन्यास गतिविधि, अन्नपूर्णा प्रकाशन, 106/154, गांधीनगर, कानपुर -12, पृष्ठ: 184.
3. गुप्ता, (डॉ.) ज्ञानचंद्र: स्वतंत्रता के बाद हिंदी-उपन्यास और ग्राम-चेतना, अभिनव प्रकाशन, पश्चिम सिलमपुर, दिल्ली-31, पृष्ठ: 120.

मूल किताबें

1. अवस्थी, राजेंद्र: जंगल के फूल, राजपाल एन्ड सन्स, काश्मीर गेट, दिल्ली, संस्करण: हाँ, 1979.
2. भट्ट, ध्रुव: तत्वमसि, गुर्जर ग्रंथरत्न कार्यालय, रतन पोण नाका सामे, गांधी मार्ग अहमदाबाद-001, पुनर्मुद्रण: 2001.